IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 6, November 2024 Impact Factor: 7.57

Hkkjrh; Kku ijEijk d lnHk e ub f'k{kk uhfr 2020 dh çklfxdrk

M,- çfr"Bk 'kek
सहायक प्राध्यापक, हिंदी अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन(म.प्र.)

lkjk'k

भारतीय ज्ञान परंपरा में साहित्य चिंतन, वेदों से लेकर संत साहित्य और आधुनिक विधाओं तक फैला है, जो धर्म, दर्शन, नैतिकता, सामाजिक चेतना और लोकजीवन को गहराई से अभिव्यक्त करता हैय यह सिर्फ ज्ञान का माध्यम नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक सुधार का भी शक्तिशाली उपकरण रहा है, जिसने भारतीय सभ्यता को विशिष्ट पहचान और निरंतरता दी है, जिसमें काव्य, कथाएँ और नाटक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को समग्र रूप से समृद्ध बनाना, आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान का समन्वय करना, और नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है, ताकि व्यक्ति न केवल ज्ञान प्राप्त करे, बल्कि समाज के लिए उपयोगी और मोक्षगामी भी बन सके, जिसमें विज्ञान, कला, दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और योग जैसे क्षेत्रों में प्राचीन भारत के योगदान को पुनर्जीवित करना शामिल है।

iLrkouk

नीतिशास्त्र के अन्तर्गत शुभाशुभ सकारात्मक नकारात्मक प्रयासों के निर्णय सम्बन्धी जिन नियमों का निर्देशन किया गया है, वे सभी नैतिकता की श्रेणी में हैं। नैतिकता जीवन को सुखमय व श्रेष्ठ बनाते हुए पारलौकिक जीवन को भी कृतार्थ करती है, ऐसा भारतीय दर्शन का नीति शास्त्र निर्विवाद रूप को मानता है। प्राचीन काल में मानव के अन्तःकरण की पवित्रता नैतिकता का सबसे बड़ा कारक थी। भौतिक लक्ष्यों से अधिक व्यक्ति आध्यात्मिक लक्ष्यों पर केन्द्रित था। आत्म–संतुष्टि व संयम उसके चरित्र में सम्मिलित थे। विषयों के प्रति उसका झुकाव मात्र जीविकोपार्जन तक ही सीमित था, लालच हेतु नहीं। कालान्तर में मानसिक विकृतियाँ प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण तथा अत्यंत विषय–वासना ने नैतिक मूल्यों का पतन कर मानव को अनैतिकता की ओर अग्रसर कर दिया। वासनाओं को नियन्त्रित करने के लिए प्रत्याहार के रूप में योगदर्शन का लक्ष्य आध्यात्मिक कल्याण तो है ही। इसके साथ ही यदि हम पौराणिक भारतीय मीमांसाओं पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि हमारी सभ्यता का मूल मंत्र है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में दार्शनिक एवं आध्यात्मिक तत्त्व भारतीय परंपरा में दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन विद्वानों ने जीवन के सत्य एवं अध्यात्म को आधार बनाकर शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। उपनिषद्, वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय तथा वैशेषिक दर्शन के सिद्धांतों में मानव मन एवं आत्मा के रहस्य को समझने का मार्ग बताया गया है।", "सत्यमेव जयते" ब्रह्म वाक्य इन शिक्षाओं के माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति जाग्रत कर जीवन का श्रेष्ठतम रूप प्राप्त कर सकता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली विशेष रूप से मानव कल्याण एवं उच्च आदर्शों पर आधारित रही है। आज जीवन के विविध क्षेत्रों में प्राचीन दार्शनिक परंपराएँ प्रासंगिक हैं।

cht 'kCn% सनातन ज्ञान, परम्परा, शिक्षा प्रणाली, नई शिक्षा नीति 2020

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 6, November 2024 Impact Factor: 7.57

Hkkjrh; Kku ijaijk o ubZ f'k{kk uhfr 2020 dk leUo;&

आज के यूग में नई षिक्षा नीति 2020 षिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है। शिक्षा की प्रक्रिया में जब तकनीकी या प्रौद्योगिकी मिश्रण किया जाता है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारी शिक्षण प्रक्रिया पर पड़ता है । जब शिक्षण में मशीन एवं अभिक्रमित अनुदेशन का प्रयोग होता है तो वह शिक्षा तकनीकी कहलाती है, साथ ही शिक्षा उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप से लिखना एवं उनकी प्राप्ति के लिए दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग करने को भी शिक्षा तकनीकी कहा जाता है। शिक्षा तकनीकी को परिभाषित करते हुए एस. एस. कुलकर्णी ने लिखा है: ''तकनीकी तथा विज्ञान के आविष्कारों एवं नियमों का शिक्षा की प्रक्रिया में प्रयोग को ही शिक्षा तकनीकी कहा जाता है। ''भारत, विश्व में शिक्षा की विकासशील दुनिया में प्रौद्योगिकी का एकीकरण सिखाने के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में खड़ा है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को और सुलभ बना दिया है। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म और शैक्षिक ऐप के साथ, छात्र इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी शिक्षण सामग्री और कोर्स वर्क तक पहुंच सकते हैं। सुलभता के अलावा प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को और अधिक आकर्षक और रोचक बना दिया है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के द्वारा हम अपनी शिक्षा व्यवस्था और शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, सरल, स्पष्ट, आसान, रोचक, प्रभावी बना सकते हैं। जब हमारी शिक्षा व्यवस्था रोचक होती है तो हम छात्रों के व्यवहार में मान्य या वांछित परिवर्तन कर सकते हैं। शिक्षक छात्रों से संवाद करने और कक्षा से बाहर सहायता प्रदान करने के लिए ईमेल मैसेजिंग ऐप और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को हम निम्न बिंदुओं में दर्शा सकते हैं:

आधुनिक शिक्षाः आधुनिक प्रौद्योगिकी ने हमारी शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन कर शिक्षा को कक्षा–कक्ष से बाहर लेकर आई और उसे ऑनलाइन कोर्सेज के द्वारा शिक्षा सबसे लिए का उदाहरण स्थापित किया। प्रौद्योगिकी के द्वारा वर्तमान समय में शिक्षा छात्रों, कामकाजी महिलाओं, पेशेवर लोगों के लिए भी उपलब्ध हो सकी है।

प्रौद्योगिकी का शिक्षा जगत में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि प्रौद्योगिकी ने ज्ञान को सबसे द्वार तक पहुंचा दिया है। वर्तमान जगत में विद्यार्थी कहीं भी बैठकर शिक्षा प्राप्त कर अपनी निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंच सकता है और अपने जीवन को सुंदर और सुगम बना सकता है।

प्रौद्योगिकी के जरिए छात्र वैश्विक स्तर पर सहपाठियों और शिक्षकों से जुड़ सकते हैं और अपने उद्देश्य को पूर्ण कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी ने सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दिया है और साथ ही सांस्कृतिक आदान–प्रदान को भी बढ़ावा मिल रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक प्रौद्योगिकी एक ऐसी विधि का विज्ञान है जिसके द्वारा हम शिक्षा के उद्देश्यों को व्यवस्थित रूप में प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही प्रौद्योगिकी हमें पथ निर्माण के लिए भी दिशा–निर्देश देती है।

विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का विकास करना, जिससे उनका व्यक्तित्व निखरे और वे समाज के लिए उपयोगी बनें. ज्ञान और विज्ञान का समन्वयः लौकिक (दुनियावी) और पारलौकिक (आध्यात्मिक) ज्ञान, तथा कर्म और धर्म के बीच संतुलन स्थापित करना. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षणः प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों (जैसे आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र) को संरक्षित औरपुनर्जीवितकरना,और उनमें निहित वैज्ञानिक सोच को उजागर करना. नैतिकता और मूल्यों की स्थापनाः अहिंसा, परस्पर सहयोग, एकता और भाईचारे जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना, जो आज की समस्याओं का समाधान दे सकें. व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान का मिश्रणः जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और उन्हें बेहतर बनाने के लिए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक ज्ञान (जैसे प्राचीन व्यापार पद्धतियाँ) को जोड़ना ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 6, November 2024 Impact Factor: 7.57

वर्तमान संदर्भ में नई षिक्षा नीति का जो समावेषन किया गया है। वह नई पीढ़ी में भारतीय होने के गौरव और अपनी समृद्ध विरासत के प्रति सम्मान की भावना जगाना. , भारतीय ज्ञान परंपरा का लक्ष्य व्यक्ति को केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि उसे एक पूर्ण, जागरूक और नैतिक नागरिक बनाना है, जो अपनी जड़ों से जुड़ा हो और विश्व कल्याण में योगदान दे सके. भारतीय ज्ञान परंपरा अर्थात जो ज्ञान वेदों उपनिषदों शास्त्रीय ग्रंथ, पांडुलिपियों या मौखिक संचार के रूप में हजारों वर्षों से चला आ रहा है। इसके अंतर्गत जीवन निर्वाह करने हेतु व्यवहारिक ज्ञान जैसे शिकार या कृषि, पारंपरिक चिकित्सा, आकाशीय ज्ञान (खगोल विज्ञान), शिल्प, कौशल, जलवायु,और क्षेत्र की पारंपरिक प्रौद्योगिकियां के बारे में प्राप्त किए जाने वाला ज्ञान शामिल है।मौखिक परंपरा के अंतर्गत यह ज्ञान कहानियों, किदवंतियों लोक कथाओं अनुष्ठानों गीतों पौराणिक कथाओं दृश्य कला और वास्तु कला के रूप में प्रचलित है। भारतीय ज्ञान परंपरा आज विश्व में सबसे ज्यादा प्रचलित है।

स्थापित करने की नहीं बल्कि इस ज्ञान के व्यापक भंडार को खोजने की जरूरत है। प्राचीन ग्रंथों में छुपे इस ज्ञान के खजाने को खोजकर, उसे सँवारकर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की आवश्यकता है।

आध्यात्मिकता और समग्रता यह परंपरा आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष जैसे गहरे दार्शनिक प्रश्नों पर चिंतन करती है और ज्ञान को केवल भौतिक या बौद्धिक न मानकर आध्यात्मिक ऊँचाई तक ले जाती है. यह शरीर, मन, समाज और आध्यात्मिकता को अलग–अलग न मानकर एक संपूर्ण इकाई के रूप में देखती है, जिससे जीवन के सभी पहलुओं का संतुलित विकास हो सके. विविधता और समन्वय इसमें वेदांत, सांख्य, योग, न्याय जैसे विभिन्न दार्शनिक मतों का समावेश है, जो एक–दूसरे के पूरक हैं.

यह ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों (विज्ञान, कला, साहित्य, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष) को अलग–थलग नहीं करती, बल्कि उन्हें एक साथ जोड़कर देखती है. अनुभव–आधारित और व्यवहारिक परंपरा सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ प्रत्यक्ष अनुभव (आचरण) और प्रमाणों पर जोर देती है, ताकि ज्ञान जीवन में उपयोगी हो सके.

योग और ध्यान जैसी विधियाँ इसका प्रमाण हैं, जो मानसिक शांति और स्वास्थ्य के लिए आज भी प्रासंगिक हैं, तथा गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण होता रहा है।

आज भारत के शैक्षणिक संस्थाओं को इस कार्य के लिए आगे आना होगा और समर्पित भाव से ऐसी परियोजनाओं में जुटना होगा ताकि कोई बाहरी संस्था या इंसान इस भण्डार की खोजकर उसको एक विकृत रूप में दुनिया के सामने पेश न करे। यहां का ज्ञान–विज्ञान युगों से प्रकृति के अनुकूल रहा है और इसी कारण भारत की जीवनशैली भी औरों से हमेशा श्रेष्ठ रही है। आज यही भारत अपनी इसी विशिष्टता को भूलकर आधुनिक दुनिया के पथ पर चलने लगा है। भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं में ही वह सामर्थ्य है, जिससे भारत अकले नहीं बल्कि पूरे विश्व को शांति पथ पर ला सकता है। भारत को अपने मूल से जुड़े रहने की जरूरत है। भारत अपने ज्ञान को पुनर्जीवित कर दुनिया के बेहतर दिशा की ओर ले जाने में अपना योगदान दे सकता है। भारतीय ज्ञान परंपराएं मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं के नियंत्रण में रख सकती है। आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं जिनका समाधान भारत के प्राचीन ज्ञान और विज्ञान में हैं। देश की सरहद से ऊपर उठकर हमें मानवता के हित में कार्य करना होगा। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से है। वह तक्षशिला हो, नालंदा हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभी ज्ञान केंद्रों में यह परंपरा जुड़ी रही है, इसलिए वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है। प्राचीन काल से ही भारत अपने धार्मिक ग्रंथों, संस्कृति और बहुभाषावाद के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये तीन गुण सिर्फ शब्द नहीं बल्कि हर भारतीय का हिस्सा हैं जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं। भारतीय संस्कृति की समझ, से संरक्षण और संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान पत्ति आवश्यक है। इसके बिना हम बच्चे के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते। बच्चा जिस वातावरण में रहता है उसे आत्मसात कर लेता है, यही कारण है कि भारतीयों में भारतीय संस्कृति

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 6, November 2024
Impact Factor: 7.57

के अंश स्वतः ही झलकने लगते हैं। इसलिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी, 2020) में शिक्षा क्षेत्र के हर स्तर पर और भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर जोर और दिया गया है।

InHk xaFk Iph %

[1]. मुखर्जी आर. के. (1960): प्राचीन भारतीय शिक्षा, मुंबई, एशियन बुक कंपनी

[2]. शर्मा निशानंद (1988): भारतीय वांग्मय में शिक्षा के वैशाली, प्राकृत, जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थानम

[3]. पातंजलयोगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत् 2007, पृष्ठ 60–61 वर्मा,

[4]. अशोक कुमार, तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 2010, पृष्ठ 211

[5]. गुरु दत्त (2013): हमारी सांस्कृतिक धरोहर, नई दिल्ली, हिंदी साहित्य सदन

[6]. भागवत मोहन (2021): यशस्वी भारत, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन

[7]. NEP (2020) National Education Policy New Delhi:

[8]. MHRD 2. Jha Kanhaiya (2022), "The Essentiality of Indian Knowledge Tradition in the Education System" Dainik Jagran Editorial Article, National Institute of Open Schooling, Noida (Uttar Pradesh)

[9]. Prof- Geeta Singh, (2022) Relevance of Indian Knowledge Tradition in National Education Policy 2020, Arhat Multidisciplinary International Journal of Education Research.

[10]. सलूजा चंद किरण (2023): शिक्षा प्रतिष्ठान, वेद भवन भारतीय परिपेक्ष, दिल्ली, संस्कृत संवर्धन

[11]. उपर्युक्त 1/75 तत्रापरा ऋग्वेदी यजुर्वेदः सामवेदोऽध्ववेदः शिक्षा कल्पों व्याकरण निरुक्तं उन्दी ज्यातिषमिति अध परा यया तदक्षरंमधिगधिगम्यते

[12]. बृहदारण्यक उपनिषद्, 1/3:27 असतो मा समय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मुल्वेर्माऽमृतम गमया

[13]. मुण्डक उपनिषद, 3/133 raj bhawan rajasthan

[14]. https%//rajbhawan-rajasthan-gov-in